अली और जादुई सूप

अली और
जादुई सूप

बहुत पुराने ज़माने की बात है. ईरान में एक लड़का रहता था. उसका नाम था अली. अली के पिता एक अमीर सौदागर थे. उसकी माँ बहुत सुन्दर थीं. वो बहुत दयालु भी थीं. अली का घर एक महल था. वहाँ खूबसूरत फव्वारे और ताल थे. अली का कोई भाई-बहन नहीं था. सब लोग कहते थे कि अली अपने माँ-बाप का बेहद लाडला बेटा था.

अली के पास दुनिया की हर संभव सुख-सुविधा मौजूद थी. शायद इसी कारण वो एक बिगाड़ा हुआ स्वार्थी नवाब बना.

“मुझे यह अंगूर बिल्कुल पसंद नहीं हैं!” यह कहकर उसने मुट्ठी भर अच्छे अंगूर हवा में फेंक दिए. वो अपने पलंग पर पालथी मारकर बैठा था. उसके कंधे पर एक छोटा, काला बन्दर बैठा था. “मेरे बन्दर को भी यह अंगूर पसंद नहीं हैं. यह अंगूर सिर्फ उन भिखारियों के लिए ठीक हैं जो हमारे दरवाज़े पर बैठकर महल की शोभा बरबाद करते हैं!”

उसी समय अली के माँ-बाप उसके कमरे में आए. अली के दिल में अगर किसी के लिए प्रेम और दर्द था तो वो अपने माँ-बाप के लिए था.

“यह हम क्या सुन रहे हैं?” अली के पिता ने पूछा. “देखो, लोगों के लिए कभी ऐसा नहीं कहते.”

उसके बाद माँ ने अली के दोनों गालों पर पुच्ची दी. फिर दोनों पति-पत्नी अपने बेटे के पास बैठ गए.

“अब्बा, यह अंगूर बिल्कुल सड़े हैं,” यह कहकर अली ने अपने दोनों हाथ अब्बा के गले में डाल दिए. “यह अंगूर सिर्फ उन भिखमंगो के लिए ठीक हैं जो हमारे महल के दरवाजों पर भीड़ लगाते हैं.”

यह कहकर अली ने अपनी नाक सिकोड़ी और अब्बा का गाल सहलाते हुए कहा, “अब्बा, आप उन भिखमंगों को वहां क्यों बैठने देते हैं?”

फिर माँ ने अली के हाथ को अपने हाथ में लिया और कहा, “एक अच्छा मुसलमान गरीबों, अपंगों, बेघर और भूखे लोगों की मदद करता है. भिखारी भी ऐसे ही लोग हैं.” फिर अली का बन्दर उसके कंधे से कूदकर माँ की गोद में जा बैठा.

“देखो,” अब्बा ने अपने चेहरे के सामने दोनों हाथों को जोड़कर कहा, “देखो अली, वो गरीब खाना खाकर हमें दुआएं देते हैं. वे वहीं रहेंगे. मैं तुम से कुछ कहना चाहता हूँ.”

अली झट से कूदकर खड़ा हो गया. वो अब्बा के कपड़े देखकर समझ गया कि वो कहीं दूर सफ़र पर जाने वाले थे. “अब्बा, आप कहाँ जा रहे हैं? माँ, तुम अब्बा को जाने से रोको. उनके जाने से मुझे बहुत अकेला लगता है. मेरे बन्दर को भी.” माँ ने कुछ नहीं कहा. पर अली जानता था कि माँ भी चाहती थीं कि अब्बा नहीं जाएँ.

“मैं कुछ ही दिनों में वापिस आ जाऊँगा. अली तुम मेरी गैरमौजूदगी में अपनी माँ का ख्याल रखना. साथ में अपने गुस्से को भी काबू में रखना. ख़राब व्यवहार तुम्हें शोभा नहीं देता है!”

उस शाम अली अपनी माँ के साथ महल के आँगन में खड़ा था. उसके अब्बा एक सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर तीन नौकरों के साथ सफ़र पर निकले. उनके घोड़ों पर मसालों और हीरे-जवाहरातों के बोरे लदे थे. पर दो दिन बाद ही अब्बा वापिस लौट आए. उन्हें तेज़ बुखार था और उनके हाथ-पैरों में सख्त दर्द था.
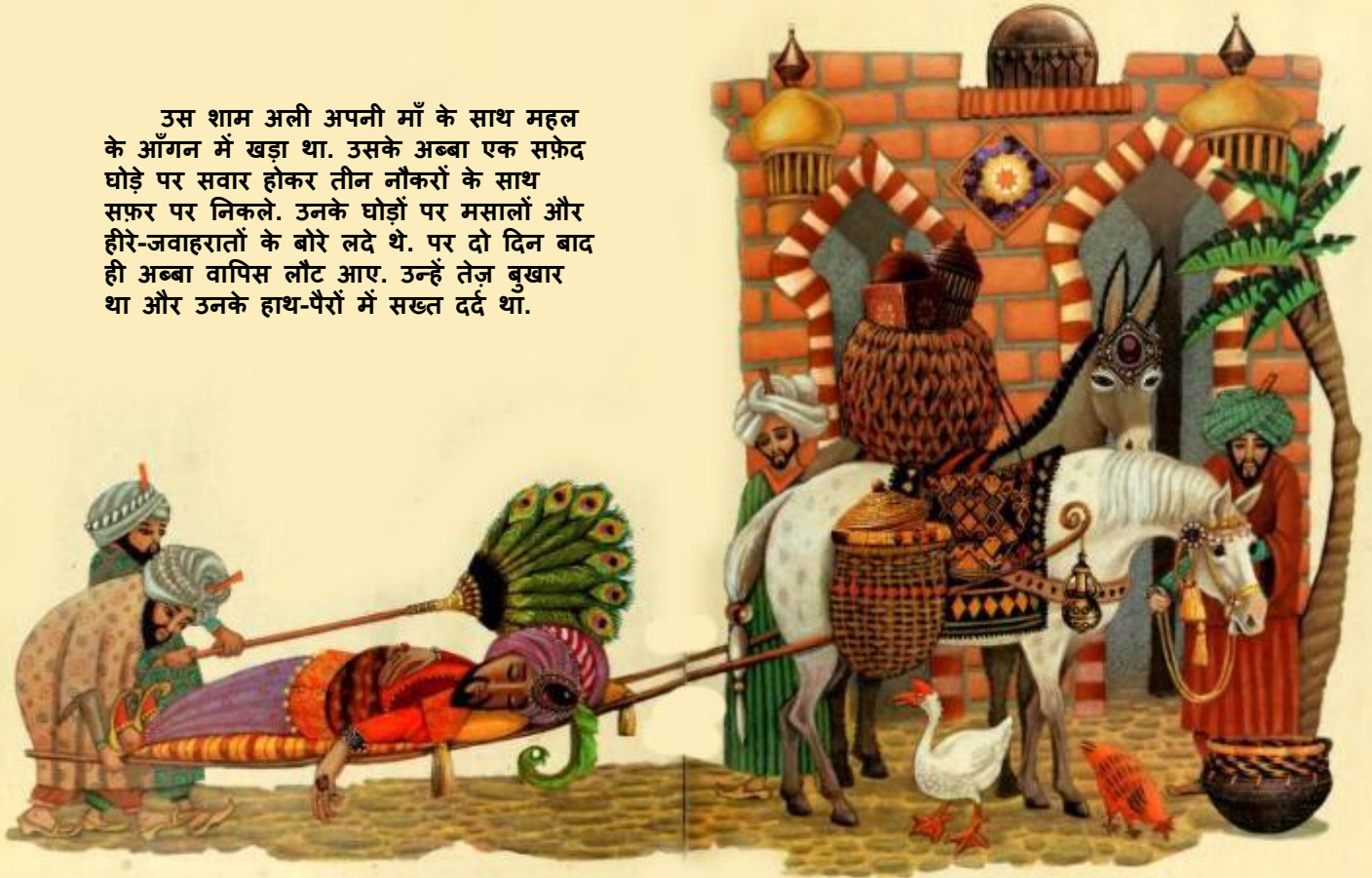
अगले कुछ दिनों में सभी नामी-गिरामी हकीमों और डॉक्टरों ने सौदागर की बीमारी की जांच की. हरेक कोई नई दवा या काढ़ा छोड़कर जाता. पर उससे सौदागर को कुछ चैन नहीं मिला.

अली अपने बन्दर को अपने सीने से चिपकाए रखता था. जब उसकी आँखों से आंसू बहने लगते तो बंदर उसके गाल पोंछकर साफ़ कर देता था.

“बताओ दोस्त, हम क्या करें? माँ, दिन-रात अब्बा के पास बैठी रहती हैं और उनके माथे को गुलाब-जल से ठंडा करती रहती हैं. हमें भी उनकी कुछ मदद करनी चाहिए.”

उसके बाद अली दबे पांव अपने अब्बा के कमरे तक गया और उसने हल्के से दरवाज़ा खटखटाया. “आओ,” माँ ने कहा. अब्बा एक ऊंचे पलंग पर लेटे थे. अली ने माँ का चेहरा इतना उतरा हुआ कभी नहीं देखा था.

“अब्बा को बहुत तेज़ बुखार है,” माँ फुसफुसाई. “वो अब कुछ खाते-पीते भी नहीं हैं. वो कुछ बुदबुदाते रहते हैं, पर मुझे उनके शब्द बिल्कुल समझ में नहीं आते हैं.”

उसके बाद अली अपने अब्बा के पास गया. “अब्बा, मैं अली हूँ. क्या आप हमसे कुछ कहना चाहते हैं?” बीमार पिता ने अपना हाथ उठाने की कोशिश की पर वो उनसे हो नहीं सका.

फिर उन्होंने बड़ी धीमी और दबी आवाज़ में “काह... काह... ला” कहा.

अली ने अपनी माँ की तरफ देखा. उसकी आँखों में एक नई चमक थी. “माँ, मुझे लगता है कि अब्बा *शुला कलमबार* कहने की कोशिश कर रहे हैं. क्या वो *शुला कलमबार* की फरमाईश कर सकते हैं? वो एक बहुत स्वादिष्ट सूप (शोरबा) है, पर ....”

“वैसे *शुला कलमबार* तुम्हारे अब्बा को ख़ास पसंद नहीं है.” माँ भी बेटे जैसे ही उलझन में पड़ी थीं. “वो सूप स्वादिष्ट है, पर कई अन्य चीज़ें हैं जो तुम्हारे अब्बा को उससे कहीं ज्यादा पसंद हैं – जैसे शहद की मिठाई, चावल की क्रीम आदि.”

फिर अली, अब्बा के पलंग के पास घुटनों के बल बैठ गया. “क्या मैं ठीक समझा अब्बा. आपने *शुला कलमबार* की फरमाइश की?” यह सुनकर अब्बा ने हल्के से अपना सिर हिलाया.

फिर बिना दूसरा शब्द कहे अली अली उस कमरे से दौड़ा हुआ रसोई में गया.

“बावर्ची, तुम जल्दी से *शुला कलमबार* बनाओ,” उसने रसोइए को आदेश दिया. “अभी बनाओ! अब्बा ने उसकी फरमाइश की है!”

“मुझे माफ़ करें मालिक,” रसोइए ने कहा, “हमारे पास दाल और लहसुन तो है, पर उसके लिए पालक और धनिया भी चाहिए. हाँ, यह दोनों चीज़ें बिल्कुल ताज़ी होनी चाहिए.”

अली ने अपने पैर पटकते हुए कहा, “फिर उन्हें लाओ!”

सिर झुकाकर रसोइए ने कहा. “किचन में काम करने वाले लड़के आज नहीं आए हैं, और मैं किचन छोड़कर नहीं जा सकता हूँ. मैंने अभी-अभी तंदूर में आपकी माँ ने लिए बक्लावा केक बनाने को रखा है.”

“देखो, मुझे उसकी कोई परवाह नहीं!” अली ने गुस्से में अपना सिर हिलाया. “फिर मैं खुद जाकर सब सामान लाऊंगा!”

अली दौड़ा हुआ अपने कमरे में गया. उसने संदूकची में से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें अपने रेशमीन पजामे की जेब में रखा. फिर वो आंगन में से होता हुआ बाहर के दरवाज़े पर गया. वहां वो एक भिखारी के कटोरे से टकराकर गिर पड़ा. "सूअर!" अली ने चिल्लाते हुए कहा. अली का घुटना छिल गया था और उसमें से खून रिस रहा था. फिर उसने एक लम्बी सांस ली और दरवाज़ा पकड़कर खड़ा हुआ. तभी उसने गलती से भिखारी का कंधा छुआ.

"आराम से उठो, अली," भिखारी ने संगीतमय आवाज़ में कहा. अली ने वैसी मधुर आवाज़ पहले कभी नहीं सुनी थी. "दुकानें बंद होने में अभी कुछ समय बाकी है."

वो सुनकर अली भौचक्का रह गया. "तुम्हें यह कैसे पता कि मैं बाज़ार जा रहा हूँ!" अली की आवाज़ में पहले जैसा ही तिरिस्कार था.

भिखारी ने कहा, "मुझे पता है," उसने धीमे-धीमे कहा. "मुझे यह भी पता है कि तुम्हारे अब्बा ने *शुला कलमबार* की फरमाइश की है. मुझे यह भी पता है कि *शुला कलमबार* में सेहत बक्शने की ताकत है.

"पर," भिखारी ने अपनी एक गंठीली ऊँगली उठाते हुए कहा, "शोरबा काम करे उसके लिए सब सामान उन सिक्कों से खरीदो जो तुम्हें सड़क पर भीख में मिलें. सब सामान – लहसुन, धनिया, दाल और पालक."

"मैं सड़क पर भीख मांगू!" यह सुनकर अली का पारा चढ़ गया. "फिर तुम अपने कटोरे के सिक्के मुझे दे दो. उनके बदले में मैं तुम्हें सोने के सिक्के दे दूंगा."

"देखो अली, मामला इतना आसान नहीं है. *शुला कलमबार* के अच्छी तरह काम करने के लिए मरीज़ के परिवार के किसी सदस्य को ही उन सिक्कों की भीख मांगनी चाहिए."

"परिवार के एक सदस्य को! अली ने भिखारी को तिरिस्कार की भावना से देखा. "मैं तुम्हारी बात पर क्यों यकीन करूं? तुम मेरे पिता की दया से यहाँ बैठे हो और मुफ़्ती का खाना खाते हो. तुम्हें असली दुनिया के बारे में क्या पता?"

भिखारी ने उस लड़के को देखा. लड़के की आँखें आधी बंद थीं. "मेरी बात पर यकीन करने की तुम्हें कोई ज़रुरत नहीं है, अली. पर अगर तुम अपने अब्बा को बचाना चाहते तो मेरी बात मानो."

इस बीच छोटा बन्दर अली के पजामे को खींचता रहा और लगातार अपने दांत किटकिटा रहा. बन्दर को भिखारी की बात पर यकीन हो गया था.

अली को भिखारी से कितनी भी घृणा क्यों न हो, लेकिन वो यह काम करेगा जिससे उसके अब्बा की जान बचे. अब्बा की तबियत अगर दुरुस्त होगी तो फिर उसकी अम्मी का मुरझाया हुआ चेहरा भी दुबारा खिल उठेगा.

"मैं भीख मांगूंगा," अली ने कहा. उसके बाद अली ने अपनी शेरवानी और हीरे से जड़ी पगड़ी सीधी की. "मुझे सिर्फ मांगने की देरी है. कोई भी इंसान मुझे खैरात देगा."

जैसे ही अली वहां से चलने लगा, वैसे ही भिखारी ने उसकी शेरवानी पकड़कर उसे खींचकर वापिस बुलाया. अली कुछ सहमा पर भिखारी ने उसकी शेरवानी नहीं छोड़ी. "तुम एक भिखारी के कपड़े पहनों, भिखारी जैसे झुको और एक भिखारी के कटोरे में भीख मांगो."

अब अली का सिर झन्ना रहा था. उसके माथे की नीली नसें तन गईं थीं. उसे लगा कि वो कीमती समय बरबाद कर रहा था. जल्दी से उसने अपनी पगड़ी और शेरवानी उतारी. इस बीच भिखारी ने भी अपने गंदे कपड़े उतारे और उन्हें अली को थमाए. अली ने पगड़ी और शेरवानी भिखारी के पास रखी. फिर अली ने अपने चेहरे पर ज़मीन की धूल पोती.

उसने भिखारी के कपड़े पहने. फिर बन्दर को कंधे पर रखकर वो भीख मांगने निकला.

अली झुका था. उसके दिल में दर्द था. वो राहगीरों की घृणा से भरी निगाहों से बचने की कोशिश कर रहा था. "कृपा करें!" कहते हुए अली, महंगे कपड़े पहने एक आदमी और उसकी बीबी के पास गया. "मेहरबानी करें! मेरे अब्बा मर रहे हैं, उनपर रहम करें. उनके शोरबे के लिए कुछ पैसे दें. अल्लाह आप पर रहम करे."

पहले तो वो आदमी-औरत उसपर झिड़के. फिर औरत ने अपने बटुए में से एक सोने का सिक्का निकालकर अली के कटोरे में डाला. पर जैसे ही अली झुका उस आदमी ने अली को ज़ोर का धक्का दिया जिससे अली और उसका बन्दर सड़क के दूसरे कोने पर जाकर गिरे. उसके कटोरे से सिक्का भी कहीं गिर गया.

"अब्बा मर रहे है! यह सूअर न जाने कहाँ-कहाँ से नए-नए बहाने इजाद करते हैं! हमारे सोने का सिक्का पाने के लिए यह क्या-क्या झूठ नहीं बोलते!"

उन तानों की परवाह न करते हुए, अली ने झट से सिक्के और कटोरे को दुबारा उठाया. अली उठकर खड़ा हुआ. उसकी आँखों के आंसू अब गालों पर लुढ़कने लगे थे. तभी बन्दर ने उसके चेहरे को अपने मुलायम पंजे से पोछा. "जो भी हुआ ठीक ही हुआ मेरे दोस्त. हमें इतनी भीख मांगनी चाहिए जिससे कि हम बस दाल, लहसुन, धनिया और पालक खरीद सकें. यह हमें करना ही है. पर लोग कितने क्रूर और कमीने हैं? मैं चिथड़े पहने हूँ, पर मेरी भी तो कुछ इज्ज़त है."

उसके बाद अली ने भिखारी की चादर को अपने शरीर पर दुबारा कसकर लपेटा और वो फिर से भीख मांगने लगा. तब तक सूरज ढलने लगा था और उसके पैर भी चलते-चलते थक चुके थे. लोगों ने उसपर खूब तानाकशी की थी – उसे "बेवकूफ" "कामचोर" और "टुकड़ों पर पलने" वाला बताया था. लोगों ने उसपर लगातार गालियाँ बरसाईं थीं. जब शाम ढलने को हुई और अँधेरा छाने लगा तब तक उसके कटोरे में कई सिक्के इकट्ठे हो चुके थे. सामान खरीदते समय अली के हाथ कांप रहे थे. बन्दर अब उससे चिपका रहा. फिर उस कीमती सामान को चादर के एक कोने में बाँधकर अली महल की तरफ दौड़ा.

भिखारी महल के दरवाज़े पर वहीँ बैठा था जहाँ अली उसे छोड़कर गया था. अली की पगड़ी और शेरवानी भी उसके पास ही रखी थी. अली सांस लेने के लिए एक मिनट वहां रुका.

“मैं अल्लाह से दुआ मांगता हूँ कि वो तुम पर मेहरबानी बक्शे, चाचा,” अली फुसफुसाया. “लोगों ने भीख मांगते समय मुझे कितनी गालियाँ दीं. उन्हें लगता था कि मैं एक गरीब फ़कीर हूँ.”

अली रुका.

भिखारी ने अपनी एक आँख खोलकर कहा. “क्योंकि तुम भीख के पैसों से सामान खरीदकर लाये हो, इसलिए तुम अब बिना देरी किए अब्बा के लिए *शुला कलमबार* बनवाओ.”

अली वहां से दौड़ता हुआ रसोईघर में गया. पहले तो रसोइए ने उसे भिखारी के वेश में पहचाना ही नहीं. वो उसे भगा रहा था पर अंत में अली ने उसे अपनी सही पहचान बताई. फिर अली ने रसोइए से जल्दी से *शुला कलमबार* बनाने की प्रार्थना की.

फिर बन्दर को अपनी पीठ पर लादे, अली गरमागरम *शुला कलमबार* लेकर अब्बा के कमरे में गया.

उसे चिथड़े पहने और चेहरे पर धूल चिपकी देखकर माँ आश्चर्य में पड़ गई. पर अली ने मुंह पर उंगली रखकर माँ से चुप रहने को कहा. "माँ, मैं तुम्हें सारी बात बाद में बताऊँगा. पर पहले अब्बा को *शुला कलमबार* खाने दो."

उसके बाद माँ अपनी कुर्सी को पलंग के नज़दीक लाईं. उन्होंने एक हाथ से पति के सिर को सहारा देकर उठाया. अली भी अपने पिता के पास बैठ गया.

"अब आप *शुला कलमबार* खाइए," उन्होंने विनती की. उसके बाद अली के एक चम्मच सूप अब्बा के मुंह में डाला.

"अब्बा आप यह खाएं - अम्मी की खातिर, मेरी खातिर, और खुद की खातिर." फिर अली ने ऊपर वाले से दुआ मांगी. "अल्लाह, इस शोरबे से मेरे अब्बा की तबियत दुरुस्त करो. उस भिखारी की बात सच हो. अगर अब्बा दुरुस्त होंगे फिर मैं उस भिखारी को वो जो मांगेगा दूंगा. मैंने पिछले कुछ घंटों में बहुत कुछ सीखा है."

"अली!" माँ ने रोते हुए कहा. "ज़रा अपने अब्बा के चेहरे को देखो. देखो, इतने दिनों बाद उनके चेहरे पर अब एक मुस्कान आई है?"

माँ की बात सच थी. अब्बा अब पहले के मुकाबले ज्यादा आसानी से सांस ले रहे थे. उनकी आँखों की पुतलियाँ थिरक रही थीं और चेहरे पर एक मुस्कान थी. एक क्षण के बाद उन्होंने आँखें खोलीं. यह देखकर अली इतना खुश हुआ कि उसके हाथ का चम्मच कांपने लगा.

"अब कटोरा-चम्मच मुझे दो," माँ ने कहकर शोरबे को अपने हाथ में ले लिया. "अब मैं अब्बा को खिलाऊंगी. तुम जाकर सिर-से-पैर तक नहाओ और इन चिथड़ों को फेंको. भला, तुम्हें यह चिथड़े कहाँ से मिले?"

"नहीं मेरे बेटे," अब अली के अब्बा बोल रहे थे. उनके आवाज़ एकदम साफ़ और बुलंद थी. "इस फटी चादर को कभी मत फेंकना. वो चादर तुम्हें हमेशा याद दिलाएगी कि मन की दरियादिली से हमेशा जीवनदाई ख़ुशी मिलती है."

"यह सबक मैं कभी नहीं भूलूंगा. अब्बा, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया." उसने अपने अब्बा के हाथ को चूमा. फिर अली दौड़कर महल के दरवाज़े पर वापिस लौटा. वहां जाकर उसने सबसे पहले उस भिखारी के पैर छुए और बड़ी विनम्रता से कहा, "क्या मैं आपकी चादर अपने पास रख सकता हूँ? बदले में मेरे अब्बा आपको एक नई चादर देंगे. शायद दो, या फिर आप जितने चाहें."

भिखारी एक डंडे का सहारा लेकर बड़ी मुश्किल से खड़ा हुआ. "अली तुम उस चादर को अपने पास हमेशा के लिए रखो. यह चादर ज़िन्दगी भर तुम्हें लोगों की गालियां और तानों का दर्द याद दिलाएगी! हाँ, अपने कपड़े वापिस ले जाना मत भूलना. अपने अब्बा से कहना मैं उनका तोहफा ज़रूर कबूल करूंगा."

अली ने कांपते भिखारी के कंधे को सहारा दिया. "चाचा, अब आप कहाँ जा रहे हैं? मैं चाहता हूँ कि आप हमेशा यहीं रहें."
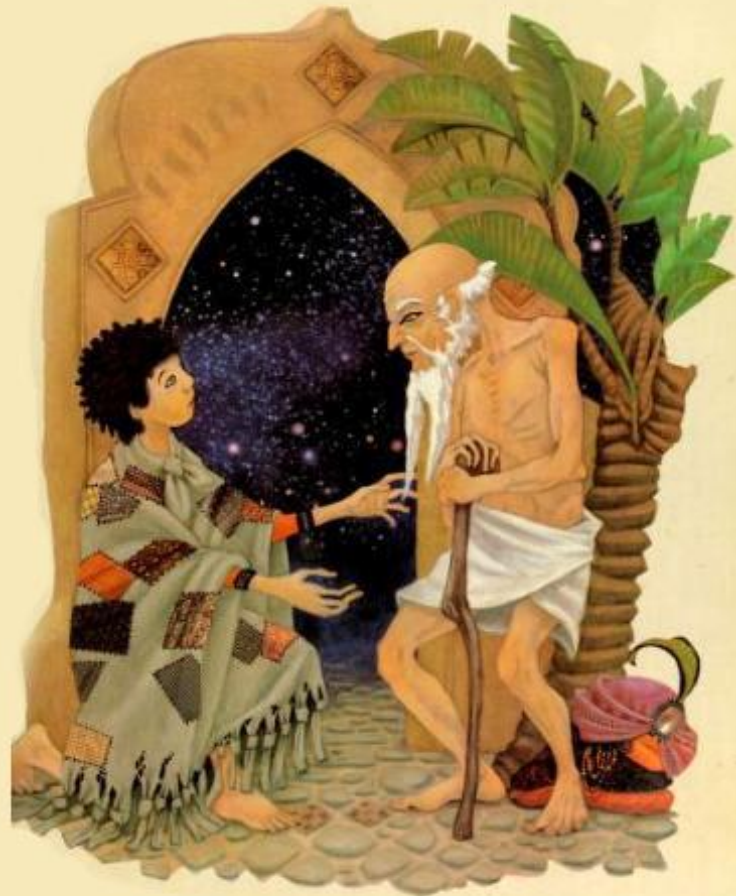
“अभी मैं जा रहा हूँ, पर मैं यहीं रहूँगा,” भिखारी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा. फिर वो एकदम खिलखिलाकर हंसा. “अभी मैं जा रहा हूँ, पर मैं यहीं रहूँगा. अब जल्दी ही तुम्हारे अब्बा की सेहत दुरुस्त होगी और तुम्हारी अम्मी के चेहरे की ख़ुशी वापिस लौटेगी.”

“और तुम,” भिखारी ने अली के माथे को छूते हुए कहा. “तुम अपने माँ-बाप के बुढ़ापे में उनकी ख़ुशी और उनका सहारा बनोगे.” यह कहकर वो बूढ़ा भिखारी अँधेरे में कहीं गायब हो गया.

अंत